प्रकाशित: 17 मई 2018 को नेशनलिस्ट ऑनलाइन डॉट कॉम में प्रकाशित -

आंबेडकर के विचारों को खारिज करने की कोशिश, दलित-मुस्लिम गठजोड़ के नाम पर राजनीति

डॉ. देवेंद्र कुमार

बीते कुछ वर्षों से राजनीतिक स्तर पर दलित-मुस्लिम गठजोड़ की कोशिश कुछ ज्यादा ही हो रही है, लेकिन इस पर गौर किया जाना चाहिए कि इस कोशिश के पीछे सामाजिक एकजुटता नहीं, बल्कि अपने-अपने सियासी समीकरण दुरुस्त करना है। दरअसल जातिवाद की राजनीति करने वाले दलों को अपनी राजनीतिक जमीन बचाए रखने के लिए यही एकमात्र रास्ता सूझ रहा है। मंदिर आंदोलन और मंडल आयोग की सिफारिशें लागू होने के बाद जैसे-जैसे कांग्रेस कमजोर हुई और दलित उससे दूर हुए वैसे-वैसे आंबेडकर का चिंतन दलित विमर्श के केंद्र में आया , लेकिन बसपा जैसे राजनीतिक दलों ने इस विमर्श का प्रसार करने के बजाय बाबा साहब के चिंतन को महज जातिवादी राजनीति के दायरे में लाकर खड़ा कर दिया। धीरे-धीरे यह धारणा बनाई गई कि आंबेडकर का दृष्टिकोण महज 'दलित चिंतन' तक सीमित है जबकि सच यह है कि उनका चिंतन राष्ट्र के समग्र विकास का चिंतन है। जब मोदी सरकार ने आंबेडकर केचिंतन को व्यापक स्वरूप देने की कोशिश की तो बाबा साहब के नाम पर वोटबैंक का गुणा-गणित बिठाने वाले दलों को असुविधा महसूस होने लगी और फिर वे एक नए विमर्श को हवा देकर दलित-मुस्लिम गठजोड़ में लग गए।ऐसे लोगों में वामपंथी विचारधारा के बुद्धिजीवी अग्रिम कतार में नजर आए, क्योंकि हिंदू विभाजन की बहस को हवा देना उनका पुराना और प्रिय शगल रहा है। चूंकि वामपंथी संसदीय लोकतंत्र में विश्वास नहीं करते थे इसलिए आंबेडकर उनके आलोचक थे। सामाजिक , आर्थिक एवं राजनीतिक , तीनों ही पक्षों पर उनके विचार वामपंथी विचारधारा के विपरीत नजर आते हैं। आज यही वामपंथी आंबेडकर का नाम लेते नहीं थकते। वामपंथ की तरह मुस्लिम जगत को लेकर भी आंबेडकर के विचार बिल्कुल स्पष्ट थे। उन्होंने भारत विभाजन पर अपनी पुस्तक में लिखा है , "ऐसा कहा जाता है कि हिंदू धर्म तो लोगों को बांटता है, लेकिन इस्लाम लोगों को जोड़ता है। यह केवल आधा सच है। इस्लाम जितनी कठोरता से जोड़ता है उतनी ही कठोरता से बांटता है। इस्लाम मुस्लिम और गैर मुस्लिम के बीच भेद करता है और यह अलगाववाद का भेदभाव है। इस्लाम का भाईचारा सार्वभौमिक भाईचारा नहीं

है। इस्लाम में बंधुत्व का जो भाव है उसका लाभ सिर्फ उन्हें मिलता है जो उसका हिस्सा हैं। ''
आंबेडकर के ये विचार लोगों को मुस्लिम समाज की हकीकत से परिचित कराने के लिए थे, न कि उसके प्रति उनके द्वेष के।

ध्यान रहे कि सच्चर कमेटी की रिपोर्ट में यह बात सामने आई थी कि विकास के तमाम प्रयासों के बावजूद मुस्लिम समाज विकास की मुख्यधारा में शामिल नहीं हो सका और ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि इस समुदाय की प्राथमिकताएं विकास के बजाय सामुदायिक एवं पंथ के प्रति निष्ठा हैं। बाबा साहब लिखते हैं , ''मुसलमानों की रुचि राजनीति में नहीं , बल्कि धर्म में है। मुस्लिम मतदाता समर्थन के लिए उम्मीदवारों के सामने जैसी शर्तें रखते हैं उससे यह बात अच्छे से स्पष्ट होती है। औसत मुस्लिम मतदाता अपने उम्मीदवार से यही चाहता है कि वह अपने पैसे से मस्जिद केपुराने लैंप की जगह नया लैंप लगवा दे या मस्जिद के लिए नई दरी ला दे या फिर उसकी मरम्मत करवा दे। कुछ जगहों पर तो मुस्लिम मतदाता सिर्फ अच्छी दावत से खुश हो जाते हैं।''

आंबेडकर का मानना था कि प्रगति का प्रश्न आने पर औसत मुस्लिम उसका मूल्यांकन अपने पंथ की परंपराओं के हिसाब से अधिक करते हैं। तीन तलाक का विषय इसका एक ज्वलंत उदाहरण है। तीन तलाक एक सुधारवादी कदम है , लेकिन मुस्लिम समाज का एक बड़ा वर्ग इस सुधार को स्वीकार करने के लिए पूरे मनोयोग से कितना तैयार है , यह सवाल तमाम विरोधाभासों से जूझ रहा है। इसमें संदेह है कि मुसलमानों के विकास का रास्ता दलित-मुस्लिम गठजोड़ से निकलेगा। ऐसा कोई गठजोड़ न तो दलितों के हित में नजर आता है और न ही वह व्यावहारिक प्रतीत होता है। इस अव्यावहारिकता की कल्पना आंबेडकर ने दशकों पहले कर ली थी। ध्यान रहे कि हिंदू समाज में दलितों केसाथ भेदभाव के मुद्दे पर भी आंबेडकर ने अनेक बार क्षोभ और गुस्सा प्रकट किया। यह भी कोई छिपी बात नहीं कि हिंदू समाज से उनकी असहमतियां थीं। उस कालखंड में सामाजिक समता पर कई संगठन काम कर रहे थे। इस विषय पर गांधी जी की चिंताएं भी थीं और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भी।आंबेडकर अपने नजरिये से असमानता की समस्या को रेखांकित कर रहे थे। दरअसल सभी का लक्ष्य यही था कि हिंदुओं के बीच व्याप्त सामाजिक असमानता की खाई को समाप्त किया जाए , लेकिन उनके तरीके भिन्न-भिन्न थे। गांधी जी ने दलित समुदाय को अपने आध्यात्मिक चिंतन की धारा में लाकर हरिजन नाम दिया तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस समस्या का समाधान समाज के बीच जाकर खोजने की कोशिश की। हिंदू धर्म से अलग होने के समय आंबेडकर ने न तो इस्लाम का रास्ता चुना और न ही वह ईसाई धर्म की तरफ ही उन्मुख हुए। आंबेडकर का दृष्टिकोण भारतीय था इसलिए उन्होंने उस बौद्ध धर्म की ओर रुख किया जिसकी उत्पत्ति हिंदू संस्कृति से हुई थी। आंबेडकर संपूर्ण वांग्मय के खंड पांच में लिखा है , ''मैं जीऊंगा तो हिंदुस्तान के लिए और मरूंगा तो हिंदुस्तान के लिए। मेरे शरीर का प्रत्येक कण और मेरे जीवन का प्रत्येक क्षण हिंदुस्तान के

काम आए।'' राष्ट्र की एकता, अखंडता एवं उसकी सांस्कृतिक चेतना के प्रति उनके विचार दलित-मुस्लिम गठजोड़ के मौजूदा सिद्धांतों के विपरीत हैं। चाहे संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने का विषय हो अथवा अनुच्छेद 370 का मुद्दा हो, आंबेडकर के विचार उनके राष्ट्रवादी दृष्टिकोण का परिचय देते हैं।ऐसी अनेक घटनाएं और बयान इतिहास में दर्ज हैं जो बाबा साहब के विचारों को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं। आज दलित- मुस्लिम गठजोड़ के नाम पर जिस तरह राजनीतिक लाभ लेने की कोशिश हो रही है वह एक प्रकार से आंबेडकर के विचारों को खारिज करने की कोशिश ही अधिक नजर आती है। विडंबना यह है कि यह कोशिश वही लोग कर रहे हैं जिन्होंने न तो बाबा साहब का सम्मान किया और न ही उनके विचारों को महत्व दिया। जो लोग भी उनके व्यक्तित्व को चुनावी वोटबैंक का हथियार बना रहे हैं वे शायद यह जानबूझकर भूल रहे हैं कि बाबा साहब भारतीयता के पुजारी और राष्ट्रीयता के पक्षधर थे।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं स्तंभकार हैं)